Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन और उनके विभिन्न आयाम

Gaurav Suman[1]* Dr. Ramakant Sharma[2]

[1] Research Scholar

[2] Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सारांश:- *महात्मा गाँधी सादा जीवन एवं उच्च विचार रखने वाले एक सरल व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन्होंने लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा को आवश्यक माना तथा शिक्षा के लिए लोक भाषा (मातृभाषा) को। वे शिक्षा के माध्यम से समाज में समता लाना चाहते थे। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है-तब उसमें विवेक तथा सोच की शक्ति पैदा हो जाती है। शिक्षित व्यक्ति ही एकता के सूत्र में आबद्ध होकर संगठन का निर्माण करते है। महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन में वे सारी बुनियादी और व्यावहारिक बातें शामिल है, जो मानव जीवन को श्रेष्ठतर बनाती हैं। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण न केवल स्वस्थ था, बल्कि ऐसी प्रक्रिया का प्रारम्भ था, जिसको जीवन में उतारकर सभ्यता का जीवन-दर्शन कोरी आध्यात्मिक का पृष्ठिपोषण नहीं था, बल्कि मानव जीवन में आनेवाली समस्याओं और परिस्थितियों के सन्दर्भ में एक समुचित कदम था। वस्तुतः गाँधीजी के जीवन-दर्शन एवं दार्शनिक चिन्तन के द्वारा मानव जीवन की कठिनाइयों एवं बाधाओं के प्रति एक नूतन दृष्टिकोण का विश्लेषण अथवा पुरातन दृष्टिकोण का पुर्नमूल्यांकन करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिए पुराना हल अथवा निदान प्रस्तुत किया है।*

शब्द संकेत:- *महात्मा गाँधी-व्यक्तित्व, जीवन दर्शन एवं विभिन्न आयाम।*

----------X----------

भूमिका:-

महात्मा गाँधी सादा जीवन एवं उच्च विचार रखने वाले एक सरल व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन्होंने लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा को आवश्यक माना तथा शिक्षा के लिए लोक भाषा (मातृभाषा) को। वे शिक्षा के माध्यम से समाज में समता लाना चाहते थे। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है-तब उसमें विवेक तथा सोच की शक्ति पैदा हो जाती है। शिक्षित व्यक्ति ही एकता के सूत्र में आबद्ध होकर संगठन का निर्माण करते है। महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन में वे सारी बुनियादी और व्यावहारिक बातें शामिल है, जो मानव जीवन को श्रेष्ठतर बनाती हैं। शिक्षित व्यक्ति ही अखण्ड संगठन का निर्माण कर सकता है तथा संगठित समाज ही विकास के लिए संघर्ष कर सकता है। वैसे भी कहावत है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है। अतः देश के विकास के लिए महात्मा गाँधी ने उक्त वर्णित सत्य और अहिंसा पर विशेष बल दिया जिसमें उन्होंने शिक्षा को सर्व प्राथमिकता दी है। उन्होंने अनुभव किया कि शिक्षा के बिना मनुष्य पशु तुल्य हैं। शिक्षित नागरिक ही समाज एवं देश का विकास कर सकता हैं क्योंकि वे ही समाज की दकियानूसी परम्पराओं को तोड़ने तथा उसे नयी दिशा देने की क्षमता रखते हैं। महात्मा गाँधी एक सादा जीवन एवं उच्च विचार व्यक्तित्व रखने वाले थे। उन्होंने लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा को आवश्यक माना तथा शिक्षा के लिए लोक भाषा (मातृभाषा) को। वे शिक्षा के माध्यम से समाज में समता लाना चाहते थे। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है-तब उसमें विवेक तथा सोच की शक्ति पैदा हो जाती है। शिक्षित व्यक्ति ही एकता के सूत्र में आबद्ध होकर संगठन का निर्माण करते है।

गाँधीजी का जीवन दर्शन:

महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन में वे सारी बुनियादी और व्यावहारिक बातें शामिल है, जो मानव जीवन को श्रेष्ठतर बनाती हैं। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण न केवल स्वस्थ था, बल्कि ऐसी प्रक्रिया का प्रारम्भ था, जिसको जीवन में उतारकर सभ्यता का जीवन-दर्शन कोरी आध्यात्मिक पृष्ठिपोषण नहीं था, बल्कि मानव जीवन में आनेवाली समस्याओं और परिस्थितियों के सन्दर्भ में एक समुचित कदम था। गाँधीजी ने

www.ignited.in

कभी भी अपने विचारों को मानव मन पर लादने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि का संदेश नहीं दिया, बल्कि एक प्रयोग किया। वे नही चाहते थे कि लोग मेरे अनुयायी बनें और अंधानुगमन करें। कर्म की मंशा मानव-कल्याण की थी, जिसके लिए साधन सत्य हो। गाँधीजी के जीवन-दर्शन के व्यावहारिक पहलुओं के प्रति अपनी वैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत करते हुए सितारमैया ने स्पष्ट किया था कि गाँधीवादी नीतियों, सिद्धांतों, नियमों, आदर्शों और निषेधों आदि का केवल सिद्धांत अथवा कोरा विचार ही नही, बल्कि एक सुघड़ मार्ग है। वस्तुतः गाँधीजी के जीवन-दर्शन के द्वारा जीवन की कठिनाइयों एवं बाधाओं के प्रति एक नूतन दृष्टिकोण का विश्लेषण अथवा पुरातन दृष्टिकोण का पुर्नमूल्यांकन करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिए पुराना हल अथवा निदान प्रस्तुत किया है।

गाँधीजी के जीवन में साध्य की प्राप्ति के लिए उत्तम साधन की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य के केवल साध्य ही नहीं बल्कि साधन भी उचित होने चाहिए, क्योंकि जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य की प्राप्ति होगी। गाँधीजी की दृष्टि में साध्य और साधन दोनों सम्पृक्त होती हैं, अतः दोनों को पवित्र होना चाहिए। अपने हिन्द स्वराज में उन्होंने स्पष्ट भी किया है कि साधन एक बीच के समान तथा साध्य एक वृक्ष के समान है और साध्य तथा साधन में उसी प्रकार का घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिस प्रकार का एक बीज तथा वृक्ष में होता है। अपने इस जीवन-दर्शन को उन्होंने अपने जीवन में उतारा और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनितिक उपलब्धियों के लिए इसका अमूल्य प्रयोग किया। गाँधीजी ने मानव समाज को अंहिसा का नया संदेश दिया। युद्ध, संघर्ष, हिंसा, घृणा, क्रोध एवं प्रतिकार आदि के द्वारा समाज में शांति की स्थापना नहीं की जा सकती थी।

गाँधीजी के जीवन-दर्शन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू सत्य और अहिंसा है। हिंसा मानव जाति की सुव्यवस्थित गति की विपरीत अवस्था है। यह वह तत्व है, जो न केवल व्यक्ति विशेष के क्रियाकलापों तक सीमित है, बल्कि सामाजिक पृष्ठिभूमि का निर्णय भी करती है और आपराधिक प्रवृति और प्रतिकारात्मक परिस्थिति को जन्म देकर समाज की गत्यात्मकता को अवरूद्ध भी करती है। अतः अहिंसा और अहिंसात्मक राह ही सत्य का साक्षात्कार है, जो ईश्वर है। जीवन में अहिंसा का पालन करना सत्योपासक का पुनीत कर्तव्य है। सत्य क्या है के प्रश्नोंतर में गाँधीजी ने सत्य को ईश्वर माना है, परन्तु सत्य की प्राप्ति सहज संभव नहीं, इसके लिए उन्होंने आत्मशुद्धिकरण पर बल दिया है। गाँधीजी का यह आत्मशुद्धिकरण अन्य आध्यात्मिक व्याख्याओं की तरह हवन-पूजन और अर्चन-अर्पण नहीं है बल्कि अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और शरीरिक श्रम है। गाँधीजी ने इन शब्दों की व्यावहारिक व्यवस्था की है और सबसे बड़ी बात कि शरीरिक श्रम को सुप्रतिष्ठित किया है। शारीरिक श्रम निकृष्ट और निर्धन प्राणियों का क्रियाकलाप नहीं होता, वस्तुतः यह वह कार्य है जो मानव को अपनी सभी उपलब्धियों के लिए कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है। शारीरिक श्रम सामाजिक विकास की एक बोध और मान्य प्रक्रिया होनी चाहिए और गाँधीजी ने इसी धारणा को स्पष्ट भी किया है। अतः इनका आत्मशुद्धिकरण का अभिमत व्यावहारिक जीवन-दर्शन है।

विभिन्न आयाम:-

01. शरीर श्रम व्रत पालन के लिए गाँधीजी कई प्रकार की युक्तियाँ प्रस्तुत करते हैं। उनके लिए शरीर श्रम जीवन क शाश्वत नियम है, जो इसका पालन नहीं करता है उसे जीने का कोई भी अधिकार नहीं है। शरीर श्रम के अभाव में हमारा जीवन असंतुलित हो जाता है। ऐसे भी शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करना ही पड़ता है। अतः उचित है कि शरीर श्रम को उत्मादकता के साथ जोड़ दिया जाय जिससे एक ही समय में एक की काम से जीने और स्वस्थ्य दोनों का काम हो जाय। गाँधीजी का यह दृढ़ विश्वास था कि उत्पादक श्रम करने वाला किसान, बढ़ई, सोनार आदि अधिक स्वस्थ तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है। अतः जीने के लिए शरीर श्रम करना मानव का कर्तव्य है। शरीर श्रम के पालन से समाज की कृत्रिम विषमता मिटती है। इससे पूँजीपति और मजदूर वर्ग का भेद खड़ा नही होता। समाज से इर्ष्या-द्वेश और उँची-नीच की भावना स्वतः समाप्त हो जाती है। शरीर श्रम का महत्व समाज में बढ़ जाता है जो किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

02. गाँधीजी ने प्रत्येक नागरिक से यह आशा की कि वह शरीर श्रम के द्वारा ईमानदारी से अपनी जीविका कमाये। रस्किन की पुस्तक “अन्टू द लास्ट” पढ़ने के बाद गाँधी ने शरीर श्रम के सिद्धान्त का आदर करना शुरू कर दिया था और टाल्सटाय की रचनाओं से पूर्ण परिचित होने पर ये रचनाएँ उनके लिए एक बुनियादी कानून बन गई थी। प्रत्येक स्त्री और पुरूष को अपने हाथों से परिश्रम और काम करके ही अपनी जीविका कमानी चाहिए। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सर्वप्रथम टी0 एम0 बोन्दरवह नामक एक रूसी लेखक ने किया था। टॉल्सटाय ने उसे अपनाया और

www.ignited.in

उसे व्यापक प्रसिद्धि दी। इस सिद्धान्त के पीछे विचार यह है कि "प्रत्येक स्वस्थ्य व्यक्ति को उतना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिए, जितना भोजन की प्राप्ति के लिए आवश्यक है और अपनी बौद्धिक क्षमताओं का उपयोग उसे अपनी जीविका के उपार्जन अथवा धन संग्रह के लिए नहीं बल्कि सिर्फ मानव समाज की सेवा के लिए ही करनी चाहिए।" यही मानव जीवन का बुनियादी नियम है।

03. गाँधीजी की यह मान्यता है कि समाज में हर व्यक्ति को जीवन कर आवश्यक वस्तुओं पर समान अधिकार है। अतः हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि शरीर श्रम के द्वारा इसका उपार्जन करें और जो इसमें व्यवधान उपस्थित करे उसका वह असहयोग करे। शरीर श्रम के द्वारा अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का ही उपार्जन होना चाहिए। संग्रह के निमित्त उपार्जन करने से दूसरों को क्षति पहुँचती है यद्यपि शरीर श्रम का सच्चा अर्थ कृषि-कार्य से जुड़ा है, परन्तु हर व्यक्ति को ऐसा अवसर मिलना कठिन है। अतः इसके स्थान पर कताई, बुनाई, बढ़ईगिरी आदि का काम किया जा सकता है। अपना भंगी स्वयं बनने का अभ्यास किया जा सकता है। यद्यपि शरीर कर्म के आदर्श को प्राप्त करना कठिन मालूम पड़ सकता है, परन्तु इस दिशा में प्रयत्न करना सदैव वांछनीय है। गाँधीजी का यह विश्वास है कि बुद्धिमानीपूर्वक शरीर करना समाज की सच्ची सेवा है। यद्यपि शरीर श्रम करने वाले सभी समाजसेवी हैं, परन्तु समाज में सामान्य व्यक्तियों के कल्याण की भावना से किया गया शारीरिक श्रम समाज की रचना में सूक्ष्म क्रांति ला सकता है तथा पृथ्वी पर स्वर्ग का आनन्द दे सकता है। अतः इस व्रत का पालन करना आवश्यक है।

04. महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन में वे सारी बुनियादी और व्यावहारिक बातें शामिल है, जो मानव जीवन को श्रेष्ठतर बनाती हैं। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण न केवल स्वस्थ था, बल्कि ऐसी प्रक्रिया का प्रारम्भ था, जिसको जीवन में उतारकर सभ्यता का जीवन-दर्शन कोरी आध्यात्मिक का पृष्ठिपोषण नहीं था, बल्कि मानव जीवन में आनेवाली समस्याओं और परिस्थितियों के सन्दर्भ में एक समुचित कदम था। गाँधीजी ने कभी भी अपने विचारों को मानव मन पर लादने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह आदि का संदेश नहीं दिया, बल्कि एक प्रयोग किया। वे नही चाहते थे कि लोग मेरे अनुयायी बनें और अंधानुगमन करें। कर्म की मंशा मानव-कल्याण की थी, जिसके लिए साधन सत्य हो। गाँधीजी के जीवन-दर्शन के व्यावहारिक पहलुओं के प्रति अपनी वैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत करते हुए सितारमैया ने स्पष्ट किया था कि गाँधीवादी नीतियों, सिद्धांतों, नियमों, आदर्शों और निषेधों आदि का केवल सिद्धांत अथवा कोरा विचार ही नही, बल्कि एक सुघड़ मार्ग है। वस्तुतः गाँधीजी के जीवन-दर्शन के द्वारा जीवन की कठिनाइयों एवं बाधाओं के प्रति एक नूतन दृष्टिकोण का विश्लेषण अथवा पुरातन दृष्टिकोण का पुर्नमूल्यांकन करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिए पुराना हल अथवा निदान प्रस्तुत किया है।

05. गाँधीजी के जीवन में साध्य की प्राप्ति के लिए उत्तम साधन की आवश्यकता पर बल दिया गया हैं। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य के केवल साध्य ही नहीं बल्कि साधन भी उचित होने चाहिए, क्योंकि जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य की प्राप्ति होगी। गाँधीजी की दृष्टि में साध्य और साधन दोनों सम्पृक्त होती हैं अतः दोनों को पवित्र होना चाहिए। अपने हिन्द स्वराज में उन्होंने स्पष्ट भी किया है कि साधन एक बीच के समान तथा साध्य एक वृक्ष के समान है और साध्य तथा साधन में उसी प्रकार का घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिस प्रकार का एक बीज तथा वृक्ष में होता है। अपने इस जीवन-दर्शन को उन्होंने अपने जीवन में उतारा और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनितिक उपलब्धियों के लिए इसका अमूल्य प्रयोग किया। गाँधीजी ने मानव समाज को अंहिसा का नया संदेश दिया। युद्ध, संघर्ष, हिंसा, घृणा, क्रोध एवं प्रतिकार आदि के द्वारा समाज में शांति की स्थापना नहीं की जा सकती थी।

06. गाँधीजी के जीवन-दर्शन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू सत्य और अहिंसा है। हिंसा मानव जाति की सुव्यवस्थित गति की विपरीत अवस्था है। यह वह तत्व है, जो न केवल व्यक्ति विशेष के क्रियाकलापों तक सीमित है, बल्कि सामाजिक पृष्ठिभूमि का निर्णय भी करती है और आपराधिक प्रवृति और प्रतिकारात्मक परिस्थिति को जन्म देकर समाज की गत्यात्मकता को अवरूद्ध भी करती है। अतः अहिंसा और अहिंसात्मक राह ही सत्य का साक्षात्कार है, जो ईष्वर है। जीवन में अहिंसा का पालन करना सत्योपासक का पुनीत कर्तव्य है। सत्य क्या है के

www.ignited.in

प्रश्नोत्तर में गाँधीजी ने सत्य को ईश्वर माना है, परन्तु सत्य की प्राप्ति सहज संभव नहीं, इसके लिए उन्होंने आत्मषुद्धिकरण पर बल दिया है। गाँधीजी का यह आत्मशुद्धिकरण अन्य आध्यात्मिक व्याख्याओं की तरह हवन-पूजन और अर्चन-अर्पण नहीं है बल्कि अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और शारीरिक श्रम है। गाँधीजी ने इन शब्दों की व्यावहारिक व्यवस्था की है और सबसे बड़ी बात कि शरीरिक श्रम को सुप्रतिष्ठित किया है। शारीरिक श्रम निकृष्ट और निर्धन प्राणियों का क्रियाकलाप नहीं होता, वस्तुतः यह वह कार्य है जो मानव को अपनी सभी उपलब्धियों के लिए कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करता है। शारीरिक श्रम सामाजिक विकास की एक बोध और मान्य प्रक्रिया होनी चाहिए और गाँधीजी ने इसी धारणा को स्पष्ट भी किया है। अतः इनका आत्मशुद्धिकरण का अभिमत व्यावहारिक जीवन-दर्शन है।

07. गाँधीजी के जीवन-दर्शन के आधार भले ही धार्मिक ग्रंथ रहें हों, परन्तु अपने मौलिक रूप से उनके जीवन-दर्शन आर्थिक विचार से अनुप्राणित हैं। गाँधी के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचारों के जन्म में देश के प्रतिकूल परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव पड़ा था। अंग्रेजी शोषण के शिकार भारत की दुःखी जनता के दर्दनाक और दुःखद आयामों को गाँधीजी ने अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने यह भी महसूस किया था कि किस प्रकार अंग्रेजी शासन की मूलभूत अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्यात को समाप्त कर रहा है। यहाँ के कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, लघु उद्योग और कृषि उद्योग आदि को धीरे-धीरे समाप्त कर रहा है और उसकी जगह औद्योगिक निर्भरता बढ़ती जा रही है। आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण भारत की समान्य जनता के हितों में नहीं है। गाँधीजी ने इन पक्षों पर गहराई से विचार किया तथा भारत की आर्थिक समस्याओं का विषद् विवेचन किया। उनका चिंतन एक व्यावहारिक आर्थिक चिन्तन था। उनके आर्थिक चिन्तन में आत्मवाद, समानतावाद के आदर्शवाद और यथार्थवाद का सम्मिश्रण है। उनका आर्थिक चिन्तन अहिंसा, अपरिग्रह, सर्वोदय, और सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्तों पर आधारित था। यही कारण है कि उनकी आर्थिक विचारधारा के मूल मंत्र आत्मनिर्भरता, विकेन्द्रित उत्पादन और समान वितरण हैं। वे पूँजीवाद की तरह केवल भौतिक मूल्यों पर जोर नहीं देते, बल्कि मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक संरक्षण पर भी जोर देते हैं।

08. गाँधीजी के जीवन-दर्शन में मानवीय मूल्यों की स्थापना की गई हैं। गाँधीजी ने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के संर्वधन एवं विकास पर विशेष बल दिया। उन्होंने एकादश व्रत की जो कल्पना कि हैं उसमें प्रत्येक मनुष्य आत्मयशुद्धि के माध्यम से व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को परिष्कृत करने का प्रयास करेगा। इसलिए एकादश व्रत को गाँधीजी ने नित्य का जीवनक्रम बनाया। इस व्रत में शरीर श्रम से लेकर ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा आदि के संकल्प हैं। इस प्रकार मनुष्य को अपने भौतिक जीवनक्रम में हीं स्वार्थपरता, दोष, विकार नहीं आना चाहिए। तभी व्यक्ति पवित्र एवं उच्च होगा और सभी सामाजिक जीवन भी पवित्र होगा। गाँधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रम में सारे समाज निर्माण की प्रक्रिया ड़ाल दी है। एक समाज निर्माता, एक युगद्रष्टा और व्यावहारिक अर्थशास्त्री के गुण गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में झलकते हैं। गाँधीजी जहाँ एक ओर मनुष्य को इकाई के रूप में विकसित करना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर मनुष्य के व्यक्तिगत गुण जैसे सत्य, अहिंसा, करूणा, प्रेम, परोपकार आदि गुणों एवं मूल्यों को सामाजिक मूल्य बना देना चाहते हैं। व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट विकास, व्यक्ति का सही अर्थ में सामाजिक प्राणी एवं विवेकपूर्ण प्राणी होना है। यह संभव है कि जब व्यक्ति अपने छोटे-छोटे स्वार्थों से उपर उठे और अपने सुख-दुःख को दूसरे के सुख-दुःख में देखने का प्रयास करें।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि गाँधी जी के जीवन और दर्शन के विभिन्न आयामों का महत्व भारतीय जनजीवन व शिक्षा के लिए अनिवार्य प्रतीत होता है। गाँधीजी का मानना है कि शिक्षा को जीवन से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि शिक्षा से मनुष्यता व शान्ति दोनों मिलती है शिक्षा के बिना मनुष्य पशु समान है। गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को केवल अक्षर ज्ञान कराना ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसका आत्मिक उन्नयन, सामाजिक एवं मानवीय गुणों का विकास, बौद्धिक विकास चरित्र एवं शील निर्माण तथा नैतिक मूल्यों का विकास करना होना चाहिए। गाँधीजी विद्यार्थियों में सामाजिक समानता लोकतान्त्रिक भावना, राजनैतिक चेतना एवं नैतिक मूल्यों का विकास करने वाले पाठयक्रम की सिफारिश करते प्रतीत होते हैं। बाबा साहेब मनोवैज्ञानिक व वैज्ञानिक तकनीकों पर आधारित शिक्षण विधियों के समर्थक थे। खोज उपागम, समस्या समाधान

www.ignited.in

तुलनात्मक विधि तथा वाद-विवाद विधि को प्राथमिकता दी है। गाँधीजी विद्यालय को लघु समाज मानते थे। इसलिए विद्यालय में स्वतंत्रता, समता भ्रातृत्व व लोकतान्त्रिक वातावरण पर बल दिया। क्योंकि आज के विद्यार्थी ही कल के नागरिक होंगे जो कि एक समतावादी समाज की स्थापना कर सकेंगे। गाँधीजी ने शिक्षक के विषय में कहा है कि शिक्षक को ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थी की आवश्यकता को पिता की भांति समझे। वह सभी विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के शिक्षा दे तथा विद्यार्थियों से आत्मीयता बनाये रखे। उसमें नैतिक गुणों का समावेश होना चाहिए। गाँधीजी शिक्षार्थी को जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु, चिन्तनशील होने पर बल देते हैं। गाँधीजी धार्मिक शिक्षा के पक्ष में थे किन्तु किसी धर्म विशेष की शिक्षा देने के पक्ष में नही थे। वे सभी धर्मो की नैतिक व सारभूत तत्वों की शिक्षा देने के पक्ष में थे। वे धार्मिक अन्धविश्वासों व आडम्बरों में भी विश्वास नही करते थे। गाँधीजी का मत है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए क्योंकि मातृभाषा द्वारा ही सम्पूर्ण राष्ट्र को अच्छी तरह से शिक्षित किया जा सकता है।

सन्दर्भ:-

1 गाँधी, मो0 क0 -सम्पूर्ण, गाँधी वाड्यम, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली खण्ड-1 से 67 तक, 1958-1979

2 कालेलकर, -काका सत्याग्रह विचार और युद्ध नीति, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी संस्करण-प्रथम, 1965

3 कुमारप्पा, जे0 सी0-स्थायी समाज व्यवस्था, अ0 भा0 सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1960

4 कुमारप्पा, जे0 सी0-महात्मा गाँधी जीवन और चिन्तन, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, सितम्बर, 19

Corresponding Author

Gaurav Suman*

Research Scholar